GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

RECORD OF PARTICIPATIVE LEARNING 2023-24

DEPARTMENT OF HINDI

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

5व 6 मार्च 2024

“वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श” विषय पर दिनाँक 5व 6 मार्च 2024 को आयाजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि पद्मश्री उषा बारले, (अन्तराष्ट्रीय पंडवानी गायिका) विषय विशेषज्ञ के रूप में जया जादवानी, (राष्ट्रीय साहित्यकार रायपुर) डॉ. नीलम जैन (विजिटिंग स्कालर SJSU,अमेरिका) डॉ. मृणाल शर्मा (साहित्यसेवी, अभियंता, सिडनी, आस्ट्रेलिया) डॉ. श्वेता दीप्ति, (विभागाध्यक्ष हिंदी, त्रिभुवन वि.वि. कीर्तिपुर, काठमांडू ,नेपाल) डॉ. विवके मणि त्रिपाठी, (एसोसियेट प्राध्यापक, क्वांगतोंग विदेशी भाषा वि.वि.चीन) उपस्थित थे। इस संगोष्ठी में देशभर के विभिन्न प्रदेशों के प्रतिभागीगण भौतिक रूप से एवं ऑनलाइन मोड से जुड़े थे।

दैनिक
भास्कर दूत
नज़र हर खबर पर
दिल में छत्तीसगढ़
web- www. bhaskardoot.com
डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/68/2022-24
◆ वर्ष-11 ◆ अंक - 61 ◆ RNI-CHHHIN/2014/55697 ◆ रायपुर, बुधवार 06 मार्च 2024 ◆ पृष्ठ-8 ◆ मूल्य - 02 रुपये

नारियां अपनी जिम्मेदारियों से कभी रिटायर नहीं होती हैं : पद्मश्री बारले

भास्कर दूत

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, हिंदी विभाग के तत्वाधान में 5 मार्च को वैश्विक परिपेक्ष में नारी विमर्श विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया।

स्वागत उद्बोधन में विभागाध्यक्ष डॉ. जागृत ने कहा कि महिला विमर्श मानसिक प्रदूषण से जुड़ा है। आधी आबादी की स्थिति सोचनीय क्यों है। इसका निवारण कैसे हो यह इस शोध संगोष्ठी का विषय है। प्राचार्य डॉ. टांडेकर ने आशीर्वचन में महाविद्यालय के गौरवशाली इतिहास का उल्लेख किया उन्होंने कहा कि नारी विमर्श वर्तमान में एक जागृत विषय है। प्राचीन काल से ही नारी का ओजस्वी रूप देखने को मिलता है इतने सामान्य व पूज्यनीय होने पर भी देश में नारी विमर्श जैसे विषय पर चर्चा की जरूरत क्यों है। इसका कारण हमें जानना होगा नारी के बिना देश का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। मुख्य अतिथि अन्तर्राष्ट्रीय पंडवानी गायिका पद्मश्री उषा बारले ने कहा कि नारी महान है। नारी कभी अपने दायित्वों से रिटायर नहीं होती है उसे गृहस्थी से कभी फुर्सत नहीं मिलती

नारी विमर्श वर्तमान समय में एक जागृत विषय है : टांडेकर

नारी के कई रूप है। नारी अनेक गुन से सुसज्जित है। नई अपनी सभी जिम्मेदारियां का बखूबी निर्वहन करती है। उन्होंने महाभारत के प्रसंग द्वारा द्रौपदी के भावनाओं को लोकगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। वहीं देवी द्रौपदी अपने पतियों के जान की रक्षा के लिए एक रानी होते हुए भी दासी बनकर बनवास काल में जीवन यापन किया। यह विषय अपने साथ हमेशा कुछ न कुछ नया जोड़ता है। नई पीढ़ियों से अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती रही है। स्त्री विमर्श का स्वरूप कैसा हो यह एक विस्तार का विषय है। विशिष्ट अतिथि प्राचार्य डॉ. बीएन मेश्राम ने कहा कि नारी समस्या का समाधान अभी तक नहीं मिला है, नारी सृष्टि का आधार है। सहनशीलता दया क्षमा नारी का आभूषण है नारी हिंसा को रोकने की प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। नेपाल से पधारे विषय विशेषज्ञ डॉ. श्वेता दीप्ति ने कहा कि वह छत्तीसगढ़ की भूमि पर आकर यहां की संस्कृति और लोगों से मिलकर अभिभूत है उन्होंने प्रकाश डाला की स्त्री कई सदियों से अपने सवालों के जवाब ढूंढ रही है। स्त्रियों की सोच में आधुनिकता होनी चाहिए। क्योंकि सोच वह अधूरी है जो परिवार के आधार को मजबूत करती है। हमें आधुनिकता को पहनावे से नहीं नापना चाहिए पुरुष का अस्तित्व स्त्री के बिना संभव नहीं है। राष्ट्रीय साहित्यकार कैलाश बनवासी ने कहा कि मैं व्यक्तिगत रूप से स्त्रियों की दयनीय दशा का दर्शक रहा हूं। समाज में स्त्री प्रताड़ना के अनगिनत उदाहरण है। अब समाज बदल रहा है। स्त्रियां अब मुखर हो रही है वह अपने अधिकारों के लिए सचेत हो चुकी है।

भारतीय नारियों की वजह से ही भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है - प्राचार्य डॉ. टांडेकर

राजनांदगांव (पहट)। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय बहुविषयक अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श विषयक के द्वितीय दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में शासकीय शिवनाथ महाविद्यालय, राजनांदगांव, प्राचार्य- डॉ. सुमन बघेल, अध्यक्षता शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव, प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर, विशिष्ट अतिथि साहित्यसेवी, आस्ट्रेलिया डॉ. मृणाल शर्मा, पं. रविशंकर विवि रायपुर, हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मधुलता बारा, अधिष्ठाता, दृश्यकला संकाय इ.क.स. विवि. खैरागढ़, डॉ. राजन यादव, प्राचार्य, डॉ. उमाकांत मिश्रा, विजिटिंग स्कालर एसजेएसयू, अमेरिका- डॉ. नीलम जैन, प्रो. समन्वयक पत्रकारिता एवं संचार विभाग हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर म.प्र. डॉ. अलीम अहमद खान, त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर काठमांडू, नेपाल डॉ. श्वेता दीप्ति, व्यंग्यकार एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी, शास. दंतेश्वरी

महाविद्यालय, दंतेवाड़ा डॉ. शंकर मुनि राय शोध संगोष्ठी के संयोजक हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. बी. एन. जागृत सह संयोजक डॉ. प्रदीप कुमार साहू उपस्थित रहे। शोध संगोष्ठी के संरक्षक व प्राचार्य, डॉ. के. एल. टांडेकर ने कहा कि भारतीय संस्कृति से सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि इसका प्रतिनिधित्व भारतीय नारियों के द्वारा होता है। नारी विमर्श पर समाज में सजकता बढ़ रही है लोग नारी सम्मान के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ. सुमन बघेल ने कहा कि नारी विमर्श प्रत्येक युग का विषय है महिलाओं को सम्मान और अधिकार दोनों मिलना चाहिए। नारियों को अपने अस्तित्व, अस्मिता और आत्मसम्मान के लिए बहुत लड़ाई लड़नी है। आर्थिक आत्मनिर्भरता, शिक्षा एवं आत्म निर्णय बहुत जरूरी है। विशिष्ट अतिथि डॉ. अली मोहम्मद खान ने कहा कि महिलाओं को दृढ़ निश्चय होना चाहिए। आने वाला वक्त जागरूकता का है। मानव तस्करी में महिलाओं बढ़ते उत्पीड़न पर उन्होंने अपनी चिंता व्यक्त किया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञ डॉ. नीलम जैन ने ऑनलाइन माध्यम से नारी विमर्श पर अपने विचार रखते हुए कहा कि नारी विमर्श एक उद्घोष, या नारा नहीं है यह एक पीड़ा वेदना और चिंताधारा है जो मुखर होना चाहती है। वहीं उन्होंने कहा कि नारी उत्पीड़न में अमेरिका भी अपवाद नहीं है, स्त्री को अपने शोषण की बेहतरीन खुद ही पार करनी होगी। सिडनी ऑस्ट्रेलिया से पधारे विषय विशेषज्ञ डॉ. मृणाल शर्मा ने कहा कि प्रवासी भारतीय साहित्य में नारी का स्थान एक मुख्य बिंदु है प्रवास की अपनी पीड़ा भोज और जटिलताएं होती हैं प्रवासी भारतीय नारियों की चुनौतियां बहुत अलग तरह की होती हैं। महिलाओं को पुरुषों से ज्यादा समन्वय बैठना पड़ता है।

विषय विशेषज्ञ डॉ. मधुलता बारा ने कहा कि पुरुषों महिला के अनुभव में फर्क होता है महिलाएं शरीर से तो आजाद है लेकिन विचारों से नहीं। स्त्री को अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी होगी। खैरागढ़ विश्वविद्यालय से पधारे डॉ. यादव ने कहा कि प्राचीन काल से ही नारी के प्रति दो दृष्टि रही है आज हमें सृष्टि बदलने के लिए दृष्टि को बदलना अति आवश्यक हो गया है। संगोष्ठी के समापन सत्र के तकनीकी सत्र में विभिन्न राज्यों के प्रतिभागियों ने ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीके से अपने शोध पत्र प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिभागियों द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का फीडबैक प्रस्तुत किया गया।

संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों का स्वागत छत्तीसगढ़ की शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर किया गया।

वैश्विक परिपेक्ष में नारी विमर्श विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

नारियां अपने जिम्मेदारियां से कभी रिटायर नहीं होती हैं : पद्मश्री बारले

स्वदेश संवाददाता, राजनांदगांव।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, हिंदी विभाग के तत्वाधान में 5 मार्च 2024 को वैश्विक परिपेक्ष में नारी विमर्श विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया। डॉ. नीलू श्रीवास्तव एवं छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना, राज गीत एवं स्वागत गीत के साथ शुभारंभ किया।

सेमिनार के उद्घाटन सत्र अंतर्राष्ट्रीय पंडवानी गायिका, पद्मश्री उषा बारले के मुख्य अतिथ्य एवं ,प्राचार्य- शासकीय महाविद्यालय, डोंगरगांव, डॉ. बी. एन. मेश्राम की विशिष्ट उपस्थिति के साथ दिग्विजय महाविद्यालय के प्राचार्य डा के एल टांडेकर(संरक्षक) की अध्यक्षता में गरिमामयी तरीके से संपन्न हुआ।।

इस आयोजन में आधार वक्तव्य, राष्ट्रीय कथाकार, रायपुर जया जादवानी, विषय विशेषज्ञ त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल - प्राध्यापक डॉ. श्वेता दीप्ति, क्वागतोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन- एसोसिएट प्राध्यापक डॉ. विवेकमणि त्रिपाठी, राष्ट्रीय साहित्यकार भिलाई- कैलाश बनवासी, प्रो. समन्वयक पत्रकारिता एवं संचार विभाग हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर (म. प्र.)- डॉ. अलीम अहमद खान, साहित्यसेवी, आस्ट्रेलिया डॉ. मृणाल शर्मा, संयोजक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी- डॉ. बी. एन. जागृत की विशेष व गरिमामयी उपस्थिति रही।

स्वागत उद्बोधन में विभागाध्यक्ष डॉ. बी. एन. जागृत ने कहा कि महिला विमर्श मानसिक प्रदूषण से जुड़ा है आधी आबादी की स्थिति सोचनीय क्यों है इसका निवारण कैसे हो यह इस शोध संगोष्ठी का विषय है।

प्राचार्य डॉ. टांडेकर ने आशीर्वचन में महाविद्यालय के गौरवशाली इतिहास का उल्लेख किया उन्होंने कहा कि नारी विमर्श वर्तमान में एक जागृत विषय है प्राचीन काल से ही नारी का ओजस्वी रूप देखने को मिलता है इतने सामान्य व पूज्यनीय होने पर भी देश में नारी विमर्श जैसे विषय पर चर्चा की जरूरत क्यों है इसका कारण हमें जानना होगा नारी के बिना देश का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है।

मुख्य अतिथि अन्तर्राष्ट्रीय पंडवानी गायिका पद्मश्री उषा बाले ने कहा कि नारी महान है नारी कभी अपने दायित्वों से रिटायर नहीं होती है उसे गृहस्थी से कभी फुर्सत नहीं मिलती नारी के कई रूप है नारी अनेक गुना से सुसज्जित है नई अपनी सभी जिम्मेदारियां का बखूबी निर्वहन करती है उन्होंने महाभारत के प्रसंग द्वारा द्रौपदी के भावनाओं को लोकगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। वहीं देवी द्रोपदी अपने पतियों के जान की रक्षा के लिए एक रानी होते हुए भी दासी बनकर बनवास कल में जीवन यापन किया। राष्ट्रीय साहित्यकार जाय जादवानी ने कहा कि नारी विमर्श विषय पुराना है। यह विषय अपने साथ हमेशा कुछ न कुछ नया जोड़ता है नई पीढ़ीयों से अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती रही है स्त्री विमर्श का स्वरूप कैसा हो यह एक विस्तार का विषय है।

विशिष्ट अतिथि प्राचार्य डॉ. बी. एन. मेश्राम ने कहा कि नारी समस्या का समाधान अभी तक नहीं मिला है नारी सृष्टि का आधार है सहनशीलता दया क्षमा नारी का आभूषण है नारी हिंसा को रोकने की प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है।

नेपाल से पधारे विषय विशेषज्ञ डॉ. श्वेता दीप्ति ने कहा कि वह छत्तीसगढ़ की भूमि पर आकर यहां की संस्कृति और लोगों से मिलकर अभिभूत हैं उन्होंने

34 temperature 24°
सूर्योदय सुबह 6:27
सूर्यास्त शाम 5:22
राजनांदगांव . कवर्धा । चौकी
डोंगरगांव । मोहला । छुरिया
डोंगरगढ़ । खैरागढ़ । पंडरिया
रायपुर
गुरूवार | 15.02.2024
राजनांदगांव
navabharat.news

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में अमेरिका, आस्ट्रेलिया जापान के साहित्यकारों का होगा जमावड़ा

तैयारी में जुटा प्रबंधन: 5 मार्च को शासकीय दिग्विजय कॉलेज में वैश्विक परिवेश में नारी विमर्श विषय पर अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का किया जा रहा आयोजन

नवभारत रिपोर्टर। राजनांदगांव।

नांदगांव जिला मुख्यालय स्थित स्वशासी दिग्विजय महाविद्यालय में आगामी 5 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा जापान सहित अन्य देशों के साहित्यकारों का जमावड़ा होगा। वैश्विक परिवेश में नारी विमर्श पर अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी को एक नया स्वरूप देने में महाविद्यालय प्रबंधन पूरी तरह से जुट गया है। हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बी एन जागृत ने बताया कि संस्था के प्राचार्य डॉ. के एल टांडेकर के मार्गदर्शन में आगामी 5 मार्च को वैश्विक परिवेश में नारी विमर्श पर अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। हिन्दी विभाग का यह प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार है। इस सेमीनार में देश-विदेश के साहित्यकार अपने दृष्टिकोण रखेंगे। इस सेमीनार में विशेष रूप से डॉ. श्वेता दीप्ति त्रिभुवन विश्व विद्यालय काठमाण्डू नेपाल, डॉ. नीलम जैन साहित्यकार अमेरिका,डॉ. विवेकमणी त्रिपाठी चीन, डॉ. मृणाल शर्मा आस्ट्रेलिया विशेष रूप से शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय स्तर के विषय विशेषज्ञों में विशेष रूप से डॉ. जया जादवानी, कैलाश बनवासी,डॉ. राजन यादव तथा डॉ. मधुलता बारा जैसे शिक्षाविद् अपने विचार रखेंगे. उन्होंने यह भी बताया कि नांदगांव जिले में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठी का आयोजन होने के कारण प्रदेश के भी साहित्यकार सम्मिलित होंगे।

300 साहित्यकारों का होगा जमावड़ा

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में देश-विदेश के लगभग 300 से अधिक साहित्यकारों का जमावड़ा होगा. प्रदेश के अन्य जिलों से भी शोधार्थी पहुंचकर अपनी बातें रखेंगे. इस संगोष्ठी को एक नई पहचान देने के लिए महाविद्यालय प्रबंधन पूरी तरह से जुटा हुआ है।

मुक्तिबोध संग्रहालय तथा त्रिवेणी परिसर को दिया जा रहा नया स्वरूप

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय परिसर में स्थित मुक्तिबोध संग्रहालय के साथ-साथ त्रिवेणी परिसर को भी नया स्वरूप दिया जा रहा है। ज्ञात हो कि नांदगांव जिले में साहित्य विभूति डॉ. पदुमलाल पुन्ना लाल बख्शी, डॉ. बल्देव प्रसाद मिश्र तथा गजानंन माधव मुक्तिबोध ने साहित्य को एक नई ऊंचाईयां दी थी, जिसके चलते नांदगांव जिले की पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो चुकी है।